DETAILED TRANSCRIPTION

INTERVIEWEE: KISHAN MURARI SHARMA

TIME AND PLACE: 4:30 P.M., KARAWAL NAGAR, MUKHIYA MARKET, DELHI-94

DATE: 16TH JUNE, 2001

मेरा जन्म गाँव उमरारा, डाकखाना डिबाई, जिला बुलन्दशहर में, मैं पैदा हुआ था। उसके बाद मैं ब्राहमण जाति का आदमी हूँ और ब्राहमण के नाते हमारे गाँव मे जो भी, मतलब हिन्दू सभ्यता होती थी हमारे यहाँ पहले से ही सभ्यता जो है--- मतलब सही मायने मे बच्चो को दी जाती थी। जैसे बुजुर्गो के पैर छूना, पैदा होते ही मतलब इसचीज का सबसे पहले ज्ञान दिया जाता था।

उसके बाद हमें स्कूल मे, जब हम स्कूल लायक हो गए, स्कूल मे बिठाला। गाँव मे ही स्कूल था। तो गाँव मे हमारे घरवालो ने हमें नहीं पढ़ाया - क्यो? कि वहाँ की शिक्षा जो है - गाँव के हिसाब से बच्चे पढ़ते नहीं थे। - कि हम बस्ता पट्टी, बस्ता ले और भाग आए। भई गाँव मे ही घर है। तो हम तो वहीं के वहीं भाग आते थे, इसलिए हम दूसरे गाँव मे भेजे जाते थे। तो हमारी उम्र पाँच साल की होगी जब से हमने स्कूल मे जाना शुरु किया था चार साल की हो

ऐसा इतना ध्यान तो हमें नहीं है। बाकी जब हम दूसरे गाँव मे तीन किलोमीटर पैदल चल के जाते थे, अपने गाँव मे नहीं, दूसरे गाँव मे - तो उसमे हमारे गाँव के मास्टर ही हैडमास्टर थे। तो वो हमें वहाँ आ के पढ़ाते थे। और भी इधर उधर के तीन Teacher और थे। तो पढ़ा के अपना वही छुट्टि होती थी तो अपना खेती मे मटर खाते हुए, मट्टी मे धूल मे उधम करते हुए अपने गाँव तक आ जाते थे। फिर उसके बाद वोही अपना प्रतिदिन काम होता था।

फिर हमारी थोड़ी और उम्र बड़ी हुई। उसी स्कूल मे पढ़े रहे। फिर उसके बाद हम दूसरे स्कूल मे गए। दूसरे स्कूल मे जाने के बाद वहां भी हमारे ही स्कूल के Headmaster थे। नाते मे हमारे भतीजे लगते थे, उम्र मे हमारे बाबा के बराबर होते। क्योकी हमारा जो नाता था गाँव मे वो सबसे बड़ा था। हम छोटे-छोटे थे पर हमारे जो बोहत बड़े-बड़े थे वो हमको चाचा और बाबा कहते थे। तो वो भी मतलब हमारे भतीजे लगते थे। अब उनके स्कूल मे जाकर हमने चोथी और पाचंवी तक की शिक्षा प्राप्त की। तीसरी तक की शिक्षा हमने गांव के पास जो गाँव था - हमने वहाँ से प्राप्त की और उसके बराबर जो एक गाँव था वहाँ हमने प्राप्त की। वो गाँव गालिमपुर था पहला वाला और दूसरा था हमारा ढेड़ - असदपुर ढेड़ बोलते थे उसे। तो वहा अच्छी - मतलब शिक्षा दी जाती थी।

उसके बाद हमें नाटक और ड्रामा की भर्ती कर लिया जी वहीं। स्कूल को जैसे Competition वगैरह होते हैं - चार, चार, छः, छः स्कूलो के आते थे

और वहाँ नाटक, ड्रामा करवाते थे। तो नाटक, ड्रामा में हम जो होते थे। हम इतने फसक्लास नाचते थे - मतलब हमारे मुकाबले वहा अपने block के अन्दर कोई नाचने वाला नहीं था। जब होती उम्र थी तो चचंले तो वैसे ही थे हम, तो वहाँ नाचते रहते थे। तो वैसे भी हमारा जो मास्टर था - music master - वो हमको time पे नचाता फिरता रहता था। और नचाता फिरता तो, और ज्यादा मतलब interest हो गया हमे। तो जब District बुलन्दशहर तक हमारे यहा नाटक, ड्रामा company बन के हमारे स्कूल से आते थे - तो हम उसमे सबसे फस्ट आते थे। मतलब उसमे एक हमारा जनाना पार्ट था - हा, हा, हा !! - clear बात बताए हम कि हमने ladies part किया है। और ladies part ऐसा किया है कि हम राधिका ही बनते थे जहां भी हमे बनाया जाता था। एक नाटक मे हमे Inspector बनाया था और राधिका मे हमारा गाना था -

"श्याम पत्थर न मारो बुरी बात है।
और सब बना खेल मेरा बिगड़ जाएगा,
फूट जाएगी मटकी मेरे सांवरे,
और माखन भी सारा बिखर जाएगा।"

तो ये बहुत पुराना गाना था हमारे पास और इसी गाने को लेकर हम गाया करते थे। तो वो कृष्ण जो बनता था तो वो जवाब देता था हमको इसका। तो तो अपनी भाषा मे जवाब देता था - "माखन खाऊंगा जरूर चाहे जान चली जाए।" तो वो अपनी मतलब - उसमे धुन मे निकालते थे। Teacher बना बना के हमे गाने देते थे और हम उस चीज को मतलब गाते थे।

धुन बनाना हमारा था और नाचते का पैर - आज अगर वो बज गया ना तो हम उसे फेल नहीं होने देते थे।

वहाँ से फिर हम Town school मे। Town का मतलब - हटी के बाद Town बोलते हैं हमारे कस्बे में - डिबाई कस्बा है हमारा। तो डिबाई कस्बे से हम Town school मे Junior High Secondry school बोलते थे। उसमे हम पढ़े तो वहाँ भी हमारे स्कूल के Teacher थे। कुछ, इद्रावरी गांव है, वहाँ के Teacher थे। Headmaster थे वहाँ हरी प्रसाद शर्मा। जब हमारा नाटक, ड्रामा जिला बुलन्दशहर डिप्टी के यहाँ पे पेश किया था - तो हमको वहाँ जा के Deputy ने भी ये कह दिया था - कि ये बताइए मास्टर साहब - "कि ये लड़की है या लड़का"? तो हमारे मास्टर साहब बोले - ये बहुत ऊँचे घराने का लड़का है। मगर ये उसको शौकी लगी हुई है।

उस period में हमारी उम्र कुछ नहीं थी- हमारे भट्टे चलते थे। हमारी परिस्थिति घर की बहुत अच्छी थी। और परिस्थिति घर की अच्छी होते जाते - मतलब हमारे पिताजी इस चीज़ से बहुत खुन्नक रखते थे कि लड़का नाटक, ड्रामा मे क्यों जाता है? तो हमारे पिताजी बाहर जाते रहते थे भट्टो पर, कोयला लाते रहते थे - रानीगंज, झरिया थे व इधर। तो हम उनकी absentee मे ही बाहर निकलते थे बस। अगर पता लग गया हमें, पिताजी इस हफ्ते मे घर आएंगे तो उस हफ्ते मे हम बाहर ही नहीं निकलते थे। हमारा ये हिसाब था। डर था बहुत ज्यादा।

और हमारे यहाँ जो नौकर वगैरह थे उनके हम हाथ जोड़ते थे। आज नौकर हमारे हाथ जोड़ते हैं। उल्टा ज़माना आ गया है slang! आ गया कि न आ गया? तो पहले हम नौकरों के हाथ जोड़ते थे - कि भाई पिताजी से हमारी शिकायत मत करना। और ऐसे करके हम जा रहे हैं और ऐसे करके कल आ जाएँगे, स्कूल मण्डली में हम जा रहे हैं। तो उस बात को लेकर वो हमारी शिकायत नहीं करते थे। क्योंकी दादा दादी जो हैं उन्हें मना लेते थे। उसके बाद जी जब हम घरपे आते - "कहीं गए थे"? हम झूट ज़रूर बोलते थे। विद्यार्थी ज़रूर थे, लेकिन उस period में जान बचाने के लिए झूट बोलते थे। - "नहीं हम कहीं नहीं गए"।

फिर उसके बाद हम जो हैं - आठवीं तक उसी स्कूल में पढ़े। और हमने वो रिकार्ड बनाया उस स्कूल का Music की तरफ से, centre में. मतलब जो हमारा जाता नाटक मण्डली पार्टी उसमें हमारा नम्बर वन आता था। कहीं तो हमें बनियान मिल रही है इनाम में, कहीं कच्छे मिल रहे हैं, कहीं मतलब आपको बर्तन मिल रहे हैं। तो हम ये इनाम को अपने घर पे डर की वजह से लाते नहीं थे। किसी पड़ोस का बच्चा जो होता था उसको दे देते थे। हम घर ले गए तो घर हमारी तो घर पे पिटाई होगी क्योंकी हम तो घर से चोरी कर के तो ये नाटक मन्डली करते थे। और इसके बाद हम ये इनाम ले गए तो, इनाम क्या होता होगा - 10, 15 रुपये का होता होगा। मगर पिटाई हो जाती 50, 60 रुपये की। खोपड़ी फूट अलग। इसलिए वो धंधा जो है हमने अलग कर दिया - कि इससे तो किसी को वैसे ही गिफ्ट देदे।

तो गिफ्ट देकर भाग आते थे। हमारी दादी जरूर पूछती थी - कि तू गया था तो कुछ वहां से मिला भी तुझे इनाम ? मैंने कही - इनाम तो मिला था मगर अम्माजी (हम अपनी दादी को अम्माजी कहते थे) - अम्माजी वो इनाम मिला - एक बहुत गरीब था बच्चा उसको मैं दे आया। "ठीक है, ठीक है, पता न लगे, आनि तुझे मारेगा भैय्या"। क्योंकी उनके बेटे लगते थे हमारी दादी के, हमारे पिताजी।

उसके बाद भी आठवीं क्लास तक हम बोहत अच्छे चले। उसके बाद हम नोवीं में आए - College में। कुबेर intercollege डिबाई के अन्दर है। वहां भी मतलब हमारे गाँव के ही Teacher थे। हमारे गाँव की जनसंख्या जो है Teacher और military में सबसे ज्यादा है। हमारा गाँव काफी बड़ा है और 1½ किलोमीटर की आबादी मे बसा हुआ है और उसके बाद उसमे Teacher और फौज के आदमी सबसे ज्यादा है।

तो वहां नोवी जब। नोवी के बाद दसवीं तक पढ़े। दसवी मे हम फेल हो गए। क्योंकीं हमारे गाँव का एक जो Teacher था वो मतलब नोवी मे ही फेल करना चाह रहा था हमे। Tution हम जहां जाते थे - वही मना कर आता था। क्योंकीं हमारे पिताजी से वो कुछ गाँव मे कटता था। कि ये बच्चे को Tution मत पढाओ, ये नही पढेंगे - ये है, वो है। तो मतलब उसने हमें आगे पढ़ने नही दिया। हमारे साथ के जो लड़के है न जो - 7, 8 - एक साथ जो पढ़ते थे। उन सब मे मतलब हाई स्कूल से ज्यादा कोई नही निकल पाया। भाई एक लड़का हमारे साथ का था वो जरूर निकला। तो कैसे ? वो बाहर चला गया था उसी College को छोड़ के। उसने B.A. कर ली थी मगर

B.A. करने के बाद उसका चरित्र ऐसा हो गया कि वो बदमाश बन गया था। डकैती करी उसने। पुलिस ने उसे बहुत तोड़ा। हमारी आंखो मे आंसू आए उसे देख के कि slang! हमारी society का आदमी है और उसे पुलिस ने मारा है तो गलत काम का नतीजा है। तो उसके बाद वो पढ़ता रहा, हमने पढ़ना छोड़ दिया।

मगर पढ़ना छोड़ दिया था तो हम दिल्ली भाग के कैसे आए? उसकी परिस्थिति हमारे सामने थी, कि हमारे भट्ठे चलते थे जैसे - तो हमारे मुनिम जो नौकर रहते थे, वो घाटा देते थे ज्यादा। घाटे देते थे तो वो दारू, शराब ज्यादा खाते, पीते थे। हमारे पिताजी अकेले थे। हम पांच भाई थे। पर हम पांचो भाई उस वक्त समझदार नहीं थे। जब तक हमारी Business चलती थी। जब समझदारी मे आए हम Business करने लायक, तो हमारा काम जो है आधा हो चुका था। जब आधा हो चुका था तो हमने फिर भी जोर लगाया कि सम्भाल लेंगे। नहीं सम्भल पाया। क्योंकि कर्जा हम पे पीछे का हो चुका था। फिर हमने सभी भाईयो ने सलाह करी घर बैठ के। कि पिताजी अगर चला रहे है तो चलाने दो, जब तक चलता रहे। क्योंकी पैसा तो है नही।

उसके बाद अब बताए कि अगर हम सभी भाई घर पर रहेंगे और सब की शादी भी मतलब हो चुकी थी इसी period में, हमारी शादी इतनी जल्दी नही होती। वो तो हमारे पिताजी बहुत जिद्दी थे। क्योंकी वो हमारे पड़ोस मे जो हमारे चाचा ताऊजी थे न, तो मतलब वो जैसे हमारी शादी के लिए कोई भी आया तो उसे अपने दरवाजे पे बुला लेते थे। कि इसपे तो कर्जा बहुत है भट्ठे का और ये है, वो है।

तो इस चक्कर मे हमारे पिताजी बोले - कि कितना भी कर्जा हो मगर हम चाहेंगे तो एक साल मे सभी बच्चों की शादी कर देंगे। तो हमारे पिताजी ने हमारी भी 16, 17 साल की अवस्था मे हमारी भी शादी हो गई थी। तो एक साल मे चार शादी हुई हमारे घर के अन्दर और एक बहन की शादी हुई तो पांच शादी हुई एक साल के अन्दर। तो हमारे पिताजी की बहुत हिम्मत थी। जैसे परिवार मे अकेले ही रहते थे। तो एक हमारा नौकर था। वो 19 साल तक बीस साल तक हमारे घर मे ही सेवक बन के रहा। और उसने काफी हमारे घर की सेवा की। और सेवा करते करते वो मतलब हमारे पिताजी के टाईम तक वो ठीक रहा। फिर अपने आप ही बोला की अब मैं कोई और काम करूंगा। तो कोई अपना ही काम करने के लिए बाहर चला गया। फिर हमारे यहां नौकर की जरूरत नहीं थी। Tubewell थे, पिताजी घेर मे रहते थे। सामने ही Tubewell था संभाल लेते थे। फिर उस स्थिति को देखते हुए हम दिल्ली भागे।

दिल्ली भागने का मतलब ये कि पिताजी तो चाहते नहीं थे कि हम भागें, कहीं काम करने जाएं। भई घर पे ही कहीं खेती का छोटा मोटा काम ..... भई खेती है हमारे पास काफी। मगर खेती का काम सभी भाई संभालते हैं तो फिर भी पूर्ती नहीं थी। हम सभी भाई बाहर निकले। सबसे बड़े भाई जो हैं Vice principal हैं हरोड़ा के अन्दर। उन्होंने BT.C. कर ली थी। वो और आगे को पढ़ते रहे और vice principal हैं। उसके बाद हमारे जो उनसे छोटे हैं वो अलीगढ़ मे हैं। उनसे छोटे हैं वो संतनगर बुराड़ी मे हैं। उनका नाम हरिप्रशाद शर्मा हैं। उनके बाद फिर मैं हूं - मेरा नाम किशन मुरारी शर्मा है। उसके बाद मेरा एक छोटा भाई है वो आपका B.S.F. मे service करता है। श्री नगर मे था अबतक, अब यहां तबादला हो

राजस्थान मे।

हो गया है। उसके बाद जब हम दिल्ली आए तो आते ही हमने नौकरी की। केवल 50 रुपये की। एक सरदारजी शराब चलाते थे उनके यहां।

हम ऐसे ही किसी दिन रिश्तेदार के यहां रुके हुए थे। हमारी बुआ थी वहां। तो हमारे सगे फूफा ही समझ लो, तो उनके यहां आए हम। और उनके यहां किस जगह पे आए कि जब वो गांव मे जाते थे -- दिल्ली की एक चहल बता रहा हूं आपको - कि दिल्ली में कितने ढोल के पोल आदमी बसे हुए हैं। कि वो रहते थे झुग्गी मे और गांव मे जब जाते थे तो कोठी बताते थे। कि मेरे दिल्ली के अन्दर एक कोठी है। हमारी बुआ कहती कि हमारे कार है, कोठी है। तो हमने कहा -'यार इनसे बढ़िया आदमी और इनसे ज्यादा पैसे वाला कौन मिलेगा। इनके यहां जाके नौकरी कर लेंगे। तो घर की परिस्थिति जब खराब हो गई थी तो इसी मारे हम दिल्ली आ गए थे।

फूफा जी का पता भी नहीं था किसी और से पता लेकर हम आए यहां। तो उनकी देखी कोठी तो - उनके यहां सिर झुका के जाना पड़ता, सिर झुका के ही जाना पड़ता। ऐसी कोठी थी उनकी। क्योंकी झोंपड़ी का जो गेट था केवल ढाई फिट, तीन फिट का ऊंचा था। तो मतलब जैसे उसमें सुअर दौड़ देते हैं अन्दर को!! तो उसमें सुअर की तरह जाना पड़ता, सुअर की तरह जाना पड़ता था। ऐसी जगह पे जाना पड़ा। ये दिल्ली का माहौल है हमारा शुरु का - result देखिए आप!!

उसके बाद हम सरदारजी के यहां गए, शराब का काम करते थे। तो हमने उनसे कहा कि भई नौकरी मिल जाएगी? तो हम उनकी भाषा तो जानते नहीं थे। हम तो गांव के बिल्कुल धुर्रे थे। पढ़े थे High school तक जरूर

लेकिन गांव की भाषा मे और पंजाबी भाषा मे हमने मतलब वो नही देखा था। तो वो पगड़ी देख कर हमें वैसे भी डर लगता था। हमने कही कि यार बुड्ढा आदमी है कि जवान? इसकी दाढ़ी तो काली है। मगर हमारे गांव मे मुड़ासा जो बांधता है वो बुड्ढा आदमी बांधे। यहां तो जवान आदमी मुड़ासा बांध रहा है। हमें तो इतना भी ज्ञान नहीं था कि ये सरदार होते हैं।

अब उसके बाद क्या हुआ - उसने कहा था -- '50 रूपये देंगे' - बड़ी जोर से! हमने कही साहब, 50 रूपये मे काम तो चलेगा नहीं। उसने कहा - 'रहने दे फिर अपना कहीं दूसरी जगह देख ले'। हमने कहा - फिर तो चल ही जाएगा। फिर तो चल जाएगा जब slang! 50 रूपये से ज्यादा दे ही नहीं रहा - तो काम मिलेगा नहीं - 'कर'! हमने भी 1½, 2, 4, महीने काम करा उसके 50 रूपये पर।

काम करते रहे तो उसके बाद हमें घर से खबर आई कि भाईसाहब के बच्चा पैदा हुआ है। हमने कही कि - भाई साहब के बच्चा पैदा हुआ है तो - यहां तो छुट्टि भी नहीं मिलेगी - ये तो सरकारी से भी ज्यादा नौकरी तगड़ी है यहां। क्योंकि 50 रूपये की तो नौकरी - उसमे भी छुट्टि लेने चले गए तो सरदार बोला - के या काम करले, या तो अपना छुट्टि करले। हमने कहा कि छुट्टि कर दो फिर। दूसरा जो है 50 रूपये की नौकरी मे भी छुट्टि कर दी जी। हमे वो 50 रूपये मिले। हम वो 50 रूपये लेकर के - साले के दो बच्चो के सूट लेके - 10 रूपये के - यहां तो था ही उस टैम। मैं सन 74-75 मे दिल्ली मे आ गया था और पहले आ गया था तो पता नहीं है। तो उस टैम मे सबसे पहले नौकरी मैंने 75-74 मे जाकर की है। उसके बाद जो मैं गांव गया, गांव मे आकर मैंने देखा कि यार - हमारे घर का हिसाब किताब ठीक नहीं है। दिल्ली मे ही काम करो। लेकिन दिल्ली मे

लेकिन दिल्ली में आते तो गाँव की इच्छा होती - कि यहां से अच्छा तो गांव ही ठीक है। मतलब दुर्लभ में रहते थे। कोई धंधा नहीं मिला ढंग का।

फिर हमारे यहाँ एक रिश्तेदार आए वे कीर्तिनगर मे Pioneer Plastic industry थी - उसमें वो काम करते थे। उनके द्वारा हमें काम मिला। 30 रूपये महीने। हमने वहाँ से standing अपना बनाया। हमने P.P. Industry मे ये जो T.V, Transister, Radio, डेक, Camera, इन सबके कवर बनते थे। ये injection moulding होती है plastic की - जिसके ऊपर आज सरकार ने इतना तगड़ा प्रतिबंध लगा रखा है कि बिचारे बे- -बुनियाद आज बेकार, बेरोजगार कर दिए है। ये सब हमारे दिल्ली सरकार की कमी है। जो कि ये कर दिया है अनि उस टाईम (ie in 70s), इसका दिल्ली मे इतना अच्छा काम था कि दिल्ली में लोगों को रोजगार मिल रहा था कापफी। और बेरोजगार कोई भी आता, उसे यहां आके काम मिल जाता था। तो हम उस रोजगार मे लगे साहब - वहां से 300 तक 400 रूपये तक हमारे पहुँच गए।

उसके बाद एक बार हमें 72 घंटे तक नौकरी करनी पड़ी। हमारे यहां छुट्टि चले गए। हमारे मालिक पंजाबी Operater जो था - बोला - छुट्टि जब तक नहीं देगा जब तक नया Operater नहीं आ जाता। हमने कहा - तू तो जान से ही मार के छोड़ेगा भई - जब 72 घंटे हमको घड़ी लगा के हो गई और काम करते करते हमारा शरीर कांपने लगा और रोटी हमको टाईम पे मिले नही, नींद सोने को नहीं मिले तो बताइए

नींद आ रही है, हाथ कट जाए तो हम तो बेकार हो जाएंगे
इसने कही - कि ऐसा है - आज तो हम छुट्टि करेंगे - कि
आज तो नहीं होने देंगे। हमने कही कि 72 घंटे हो
गए हैं, अगर 72 घंटे की जगह आप 12 खड़े होकर
दिखा दो तो जितने आप हमे देते हो - हमसे ले लियो
तनख्वा। तो बोले ठीक है अपना देखो और नौकरी का
हिसाब ले जाना। मैंने कही ठीक है भई अब धोंस की नौकरी
तो आजतक दिल्ली मे हमने काञ् की की नही है। गुलामी हमने
की नही है, किसी की ताबेदारी हमने की नही है। क्योंकी ताबे-
-दारी तो वो ही कर सकता है, जिसके हाथ पैरो में दम न हो,
ताकत न हो, या पीछे घर में अनाज न हो। अब हमारे
घर की History जब दीख रही है, 3 साल हो गए - दो साल
मे तो घर की History बनती जा रही थी। हमने कही कि
ससुरा दिल्ली मे अगर धक्का लगेगा भी तो ऐसा हिसाब
हो गया गाँव मे जाकर के कि रोटी तो मिलेगी आराम से।

गुलाम तो सन 47 में जब देश आज़ाद हो गया
था गुलामी अब आकर करे किसी Private आदमी की तो
इससे बढ़िया गुलामी ये ही समझलो सन 47 का ही राज है।
तो हमने कही कि गुलामी नही करेगें भई। हमारे पास 120-
150 आदमी अड्डो पर काम करता था और हम उन्हे भाईयो की
तरह रखते थे, जब हमने उन्हे गुलाम नही बनाया, तो तू
तो हमे 4 आदमियो को ही गुलाम बना के रख रहा है। हमारे
यहाँ 120 आदमी काम करता था मगर तकदीर के मारे हम दिल्ली
मे यहाँ नौकरी करने आ गए। अभी जैसे यहाँ मालिक काम
करवाते हैं आज की तारीख मे उस Time वैसे ही मालिक हमारे
यहाँ नौकरी करते थे। मगर Time खराब था हमारा और हमारा
भी Time खराब ही आना है। क्योंकीं जिनके यहाँ हम नौकरी
करते थे उनकी हालत हम से भी बद्तर हो रही है अब
क्योंकी साले- जुआरी, शराबी और लड़कीबाज इनसे सबसे

रैल है। जितनी पैसे वाली हस्तियाँ हैं। जो धर्म पे है अपने पे वो ही एक आदमी काबिल है। यहां जो जिन्दा बैठा है। अभी पे समझ लो जितने ये फैक्ट्री मालिक है, जिनमें ये देश भरे हुए है - वो तो मरे हुए है, उनसे ज्यादा मरा हुआ है। क्योंकी वो तो आदमी की कदर ही नहीं कर सकता। इन्सानियत खो बैठा है क्योंकी उसने मतलब हर चीज में, जिसने मांस मदिरा का सेवन कर लिया उसके अन्दर दिमाग मे बिल्कुल वो रहती है, नहीं है। कहते है न कि किसी पे दया, दृष्टि वो ही दिखा सकता है जो भगवान का थोड़ा भगत हो। और भगवान के भगत तो दिल्ली मे ऐसे तो है कि भगवान का तो भजन कर के आ रहे है और आते ही शराब का ढक्कन खोल रहे है कि 'है जय शंकर भोले की!!' परसाद चढ़ाय दो। तो भगवान का परसाद जो है दारू पे चढ़ जाए आजकल। तो ऐसे संत है यहाँ और ऐसे संत जैसे है यहां

उसके बाद जी फिर हमने जो कि यहाँ, वहां से नौकरी छूटी हमारी, इसी बात पे थोड़ी फिर। फिर आ गए वजीरपुर। वहीं 2 महीने हम फिर खाली रहे। खाली रहने के बाद हमने बड़े धक्के खाए, बड़ी परेशानियां काटी। साहब नहीं लग पाई नौकरी। हमने कही - कि ये तो दिल्ली है भई - इसमें तो ये कहते है कि दिल्ली मे कोई आदमी भूखो न मरे। यहां तो भूखो मरने की नौबत भी आली फिर दोबारा लौट के। हमने कही कि क्या करे ? हम फौरन अपने घर गए। घर आके फिर हमने अपनी घरवाली से कही - कि भई तुम ऐसा करो कि हमे कुछ मदद दो - कि दिल्ली मे हम दोबारा रुक सकें नहीं तो फिर हमारी नौकरी छूटी। तो हमारी घरवाली ने, कान के जो कुन्डल होते है सोने के - वो हमे पकड़ा दिए। चुपचाप से। मैंने कहा कि घरवालो को नहीं कहना वर्ना 50 गाली देंगे बाद मे भी

मिलेगी । हम उन्हें लेकर चले आए दिल्ली। वो बेच कर के - दो महीने का किराया - 40 रुपये जने 30 रुपये किराया था कमरे का - किराया दिया । शकूर पुर मे हम रहते थे । उसके बाद नीचे राशन की दुकान थी लाला की - हरियाणे वाले की । हमने राशन के पैसे उसको दिए । उसके बाद और थोड़ी राहत ~~सी~~ सी हमको मिलती है। उसके बाद हम निकलते हैं साइकिल पे नौकरी की तलाश मे । फिर इसके कुण्डल बेचने के बाद, ऊपर वाले ने तो ऐसी दिशा बदली हमारी - चाहे तो स्त्री की आत्मा समझलो - कि ...... मेरी चीज़ चली गई है बनेगी, जाने न बनेगी मतलब वो भगवान से प्रार्थना करती रहती हो या क्या हुआ कि हमें तुरन्त ही 400, 450 रुपये की नौकरी D.O. Plastic वज़ीरपुर में मिली। जो ओम-प्रकाश की आज बंद हो गई है Factory - उसमें मिली । ~~उसके बाद~~

उसके बाद वहां भी बिहारी नौकरी ज्यादा करते थे। हम बुलन्दशहर के रहने वाले थे । हमारी उनके यहाँ कदर ही नही थी। हमारी भाषा मे और उनकी भाषा में बड़ा फरक था । तो वो 20 - 25 आदमी एक group के थे, हम अकेले आदमी अकेले group के थे । तो उनसे ज्यादा हम काम करते थे। क्योंकी बिहारियो को जब दिल्ली का पानी लग जाएन तो फिर काम कर के राज़ी नही है। और जो हमारे यहां का आदमी जो बुलन्दशहरिया है वो अगर मेहनत करेगा तो करेगा अबे दूसरा डकैती मारने से राज़ी ~~हो~~ ~~[illegible]~~ है। हमारे बुलन्दशहर का आदमी ऐसा मिलेगा। तो हम अपने यहां ये सोचते हैं हैं कि बिहारी मेहनती मगर प्यार वाला होता है मगर वहां हमने समझा कि बिहारी तो अपनेपन के सिवा दूसरे को मानता ही नहीं है। वहां हमारे लिए कई बार ये चाहा कि इसे मार दो या इसे भगा दो । हमें पीटने के लिए भी कईबार रास्ते में बैठे । हमने कहा कि हम नौकरी

हमने कहा कि भई हम नौकरी तो छोड़ेंगे नहीं क्योंकी हमें बड़ी मुश्किल से तो नौकरी मिली है। या तो काम कम कर। हम मशीन जो चलाते थे - वो निकालते थे 200 - 300 पीस। हम निकालते थे 500 - 600 पीस Production में - तो वो हमारे से बोहत खफा रहते थे। कि ये ज्यादा काम करता है - ये हमारी नौकरी खाएगा। अब हमे धीरे से बता देते कि अब इतना माल - धीरे से बता देते कि अब इतना माल दे तो - तो बात ठीक है। फिर साथ मैं जो समझदार थे उनसे कही - कि नौकरी तुम्हे भी करनी है, नौकरी हमे भी करनी है, तुम हमे सारी बाते सही तरीका से बता दो। फिर हम उसी हिसाब से तुम्हारे साथ joint होके चलेंगे। कि भई ऐसा है जितना माल हम निकालते है उतना ही माल निकालो नहीं तो हम तुम्हे यहां रुकने नहीं देंगे। हमने कही - कि भई ऐसा भी ठीक नहीं है। क्योंकी हमे पैसे तुम्हारे से ज्यादा मिलते हैं। तुम्हे 300, 350 रूपये देते है हमें 450 रूपये पे रखा है। हम 450 रूपये का काम नहीं करेंगे इसका तो - हमे रखेगा नहीं, हमे तो पहले निकालेगा, तुम्हे क्या निकालेगा फिर तो उसी हिसाब से मतलब हम चलते थे। इतने मे हमने कहा कि भई ऐसा है - कि या तो तुम हमे प्यार से काम करने दो नहीं तो हम फिर बाबू से बात करेंगे। तो उसने कही - कि बाबू से बात करने लायक छोड़ेंगे ही नहीं हम तुझे। हमने कही कि बिल्कुल खतम कर दोगे भई। तो हम हंसी मे बात करते थे भई - क्योंकी हमने नाटक ड्रामा मे भी काम किया था तो हम हर बात को हंसी मे ही ले जाते थे। तो हमारी आदत बनी हुई थी - तो बोलेंगे - कि ये नी मानेगा भई।

तो हमे एक दिन क्या हुआ कि जब Production

लिखवाने जाते थे तो Manager गुलशन था - पंजाबी था। तो वो हमारे ही route से आता था - शकरपुर वाले, राजागार्डन से आता था। तो एक दिन वो हमें मिल गया रास्ते में - तो बोला के बैठो - तो मैंने बोला कि बैठ तो जाता हूँ मैं। मगर एक बात बताऊं मैं आपको कि अब मैं नौकरी छोड़ूंगा। कि क्यों? मैंने कही अब ये बिहारी जितने है ये - प्यारेलाल, और जो ये रामखिलावन और ये जो है इनके नाम तो मुझे इतने याद ना है - बाकी ये जो है मेरे मारने के चक्कर मे है। ये कहते है कि - या तो काम कम कर। कि - ऐसा करो, तुम मेरे साथ ही आओगे और मेरे साथ ही जाओगे। मैं छोड़ता हूँ जभी तुम छोड़ते हो काम। उसी टैम मेरे साथ आया करो - स्कूटर पे, स्कूटर पे ही उसी टैम आया करो। ऐसे - तुम्हारे को कोई कुछ नहीं कहेगा। हम फिर साहब - Manager खुद ही हमे लाया करे, खुद ही ले जाया करे। अब उसने ये समझ लिया कि - ये Manager का ही आदमी है। जब कि Manager से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं!। वो पंजाबी पुत्रा, हम हिन्दुस्तानी पुत्रा - तो हम बिल्कुल देसी गंवार और वो पढ़ा, लिखा आदमी था ज्यादा - तो हमने कही कि भई ऐसा है कि Manager ------ उन्हे डराने के लिए हमने जरूर कह दिया - कि ये हमारे पड़ोस के ही बिल्कुल - इन्ही के द्वारा हमे यहां नौकरी मिली है। तब जाके उनको तसल्ली हुई। तब जाके वो ठण्डे बस्ते मे बैठे जैसे आजकल की सरकार घोटला कर लेती है और दूसरी कहे कि ओए - या तो दे दे आधा, नहीं तो समझले तेरो आरपार कर दूंगा। तो वहां

पड़े है उनके - तो ऐसा ही जो है ठण्डे बस्ते मे वो काम डाल दिया। आजकल के घोटालो के तरह ही। तो जब वो काम हो गया, तो हम अपना फ्री हो गए फिर - तो हमने कहा कि अब तो हमारी जब खतम हो गई, रोज की उनसे लड़ने झगड़ने की। हम सब वहां फिर मालिक की तरफ से फ्री हो गए। मालिक ने भी हमे ऐसा काम दिया कि रात की Duty के जिम्मेवार तुम हो। और रात का देखने का काम तुम्हारा है, चाहे मशीन चलाओ - मशीन अगर खराब हो गई वो तुम्हारी जिम्मेवारी। हमने कहा कि ठीक है। फिर वहां हम काम करते रहे काफी दिन तक

फिर एक हमारे रिश्तेदार जिन्होने की हमे Pioneer Pioneer, Plastic Industry मे लगाया था, कीर्ति नगर मे - वो पहुंच जाते है। वो बोले कि हम एक Machine लगा रहे है, अपनी। अब तुम्हे हमारे पास काम करना होगा। हमने कहा कि - ठीक है जी। जब तुमने हमें काम सिखाया है, यहां तक पहुंचाया है तो हम बिल्कुल तैयार है। हमारी यहां तनख्वा हो गई थी 620। उन्होने कहा जो तुम्हे यहां मिलता है वो ही तुम्हे हम यहां देंगे। तो हमे 600 रूपये दे दी - सन 78 की बाढ़ जब आई थी यहां जमना पार मे उसी Period मे वो हमे यहां ले आए थे। कृष्णा नगर F - 116/1 मे। वहां मशीने लगी थी नई। अब उनके यार दोस्त थी थी, उनकी नहीं। मगर उन्होने ये कह दिया था मुझसे कि मुझे - अपना यार का स्या ही आदमी दूंगा मैं। वो भी सरदार थे। हमने कहीं कि सरदारो से पहली बार पाला पड़ा था आते ही दिल्ली मे - और मुझे ये दीख रहा है Last बार भी पाला पड़ा है। अब की नौकरी यहां से कहीं जाएगी। क्योंकी पहली बार था जब

टिक गया। और अब Last बार है ये। यही तक नौकरी होगी सरदार की बस।

तो आज तक का record था कि T series वाले हैं ये एक मतलब मेरे पीछे पड़े थे। इनकी Cassette मैं बनाता था। F-116/1 में बनाता था। यहां भी बनाई करावलनगर में भी। हमारे यहां एक मशीन है, हम ले आए थे कृष्णानगर से। तो यहां भी हमने काम करा कई साल उनका। उन्होंने फिर कहा - हमारे साथ चलो। मैंने कहा नहीं नौकरी एक ही जगह करूंगा जितने दिन करनी है। तो मैंने भी उसके यहां 15 साल नौकरी की.... लगातार। 15 साल तक एक ही स्थान पे नौकरी की। तो सीख के आया हूं जिस, जिस स्थान से वहां तो एक-एक, दो, दो साल के झटके दिए थे। अभी लगातार 15 साल की नौकरी मैंने एक ही जगह की।

इसके बाद सन 92-93 में मैंने नौकरी छोड़ दी और नौकरी छोड़ने के बाद मैंने यहां अपने हिसाब से अपना धंधा किया। मैंने - Gas valve, gas चूल्हा जो होता है - उसके Burner बनते हैं - उसकी factory लगाई। उसमें घाटा हुआ। हमने कही कि लोग पता नहीं कैसे बढ़ जाते हैं आगे, factory लगा, लगा के, हमें घाटा ही घाटा होता है हर काम में। तो ये बन्द हो गया धन्धा। फिर हमने जो - नल के washer वगैरह बनते, इनकी बोगली बनाई चमड़े की। हमने ब्राह्मण जात हो कर के चमड़े के काम भी खूब करे। वो कहते हैं न के कोई काम करने मे क्या बुराई है। जाति का असर नहीं होता इसमें। बाकी काम में कोई बुराई नहीं। चाहे किसी जात का आदमी है, किसी हिसाब का आदमी है। काम कैसा भी मिले चाहे - करना चाहिए। अगर नहीं करेगा तो भूखे मरना ही मरना है फिर तो। उसके बाद हमने वो भी काम करके देखा उसमे भी कोई Profit नहीं। कानपुर से हम चमड़ा लाते थे रातो रात जा कर के। आगरा से हम चमड़ा लाते थे। मगर यहां आकर के हमें

उसके बाद जी फिर हमने जो है ये काम छोड़ा, और Folding चारपाई, folding कुर्सियां, इसका काम करवाना शुरू करा। Folding चारपाई का काम खूब करा और चला भी 2-3 साल। फिर उसके बाद - नौकरी Period छोड़ने की बात है ये - मतलब फिर हमने Battery का भी काम किया। emergency light का और Battery का काम करते रहे।

और हमने जिन्दगी में अपने ज्यादातर लोगों की कोई परेशानी आती है तो हम जाने के लिए 24 घंटे तैयार रहते हैं। किसी प्रकार की कोई दिक्कत आती है, तब भी हम जाने को तैयार रहते हैं। मगर हमने अपने time में दिल्ली में आकर के परेशानी ही काटी है। सफलता अब मिली है। मकान अपना बनाया। और हमारे पास दो बच्चे हैं। दो लड़के हैं। एक लड़के ने High School पास किया अभी। एक लड़के ने B.A. Final के मतलब पेपर दिए अभी। उसके बाद लड़की हमारे पास है ही नहीं शुरू से। बस अब इनका भविष्य देखते हैं आगे का - क्या होता है। बाकी हमारी बस ये ही वो है।

मतलब हम यहां पे एक चीज से तो जरूर तंग हैं। धंधे पानी तो आगे पीछे होते ही रहते हैं मगर यहां जो सरकार है ये - गरीब तबके को, गरीब आदमी को ये सरकार कामयाब नहीं होने देती है। क्योंकि आज वहां रैली है, फलानी जगह रैली है, गरीब आदमी तो पिटता हुआ देखा तुमने मगर इन - जितने ये शहजादे जाते हैं, इनको कभी पिटता हुआ देखा है ?? किसी का सिर फूटता आया है ? इनपे पुलिसवाले, आंसू गैस वाले कितने पानी के फव्वारे फैंकते हैं ?, आंसू गैस छोड़ते हैं ? रैली में जाएंगे, हल्ला काटेंगे, मुंह फाड़ेंगे, फलाना जिन्दाबाद, BJP का जिन्दाबाद, Congress का मुर्दाबाद,

की Congress का जिंदाबाद तो BJP का मुर्दाबाद, करते जैसे बेचारे अपना गला सुखा के चले आते हैं। पिट के भी आते हैं। और ऊंचे ऊंचे हिसाब किताब के जो हैं अपने पद पे बैठे रहते हैं। slang! कुछ नहीं होता उनका और अभी देख ली रहे तुम कितने घोटाले हैं अम्मा पे - जयललिता पे!! उसके बाद संविधान भी उसके लिए टेड़ा पड़ गया। आज हमारे पे घोटाला हो जाता तो जेल की सलाख के पीछे होते। उस से पीछे तो हम जाते ही नहीं। श्रेणी ही नहीं है हमारी की सलाख के बाद मे हो!!

इसलिए हम कहते हैं कि, मतलब इस जिन्दगी में हमने देखा है कि गरीब आदमी ही पिसता आया है। और जिसने गरीब आदमी के लिए आवाज उठाई है - अब मायावती उठाती है - कि बहुजन समाज पार्टी के लिए। इसके शासनकाल मे, मायावती के शासन काल मे, उत्तर प्रदेश के अन्दर जितना दलित मारा गया है उतना किसी के शासन मे नहीं मारा गया। क्यों? कि ये दलित का नाम ही लेकर के बेकार राजनीति करती है। और दलितो को मरवाती है अपनेआप ये हकीकत मे बात है कि दलितो को मरवाने काम दलित ही नेता का काम है। जो द दलित नेता बनता है वो पहले इनको भुनवाता है उसके बाद इनपे राज नीति करता है। और अगर उच्च श्रेणी का नेता है तो पहले ऊंची जाति को मरवाएगा, जब जाके उनपे राज करना चाहेगा। तो ये राजनीति का खेल तो हमने बोहत अच्छा देखा है। कि जब तक राजनीति मे ये लोग अभी उभर सकते हैं।

एक बात बताओ? डकैत, डकैती डालता है, अब सोचने वाली बात है - डकैत, डकैती डालता है, 3 साल से ज्यादा U.P. के अन्दर उसकी ज़िन्दगी नहीं है।

और आज की तारीख मे जब से मुलायम सिंह ने गद्दी संभाली है। तो डकैत को अपनी सेवा में भर्ती कर लेते है। और महाराज उसे नेता बना देते है। और अब नेता बना के नेता बनाऐंगे और नेता बनाकर के उसे मंत्री बना देते है। फूलन देवी को ही देख लो। और भी हमारे यहां बहुतेरे ऐसे है, जो मुलायम सिंह की पार्टी में घुसे हुए है। और अपनी जान बचा के घूम रहे है। और आप सेवा मे है। तो मतलब सारी गन्ध जो है न इस time राजनीति में भरी हुई है। ये राजनीति जब तक नहीं सुधरेगी हमारे देश का उद्धार नहीं होगा।

इसी देश मे संविधान रखा है कि, U.P में संविधान आया कि- 21 साल मे अगर किसी ने ब्याह कर लिया तो उसे नौकरी नहीं मिलेगी। सरकारी। हैं?? 21 साल में उसे नौकरी तो मिलेगी नही, ब्याह, लौंडिया न मिलेगी वा कू। तो वा तो रंडुवो ही रह जाएगा। मानोगे कि नहीं? नौकरी मिली नही, छोकरी मिली नहीं तो उसका भविष्य कहां है फिर? आज की तारीख मे तो छोकरी पहले मिल जाए, नौकरी बाद में मिलती रहती है। सरकारी न मिले, Private मिले। मिल तो जा है। पेट तो भरना ही है उसे। ऐसी कोई सरकार नहीं है- 21 साल में------ लाओ मैं अपने बालकन के काऊ के ब्याह न होन दूंगो और 10, 20, जगह और प्रचार करूंगा, कि 21 साल तक बिल्कुल ब्याह न करियो रे। उत्तर प्रदेश की सरकार नौकरी देगी? देदेगी? ये फारमूले चलाना संविधान के भी खिलाफ है। और इस तरह हमारे यहां 18 साल की लड़की, 21 साल का लड़का हमारे संविधान में है।

इस से पहले क्या, क्या काण्ड हो जा है - ये संविधान में है? नाले, दुकानों में देखो हिसाब किताब। पेपर पढ़ते हो? कि जलाने कचरे के डब्बे में नवजात शिशु मिला। क्यों मिला गई? इतनी भेड़-चाल है गई कि slang! कानून में से है के बाल निकलन लगे? मतलब इतनी प्रजा बेकार हो गई है क्या कि कानून में से होकर निकलने लगे?? ये जो दिखाया जा रहा है ना, 21 साल और 18 साल इसी चक्कर में तो ये, गड्ढे में और खड्डों में जाते है बच्चे। अति पढ़ाई जरूर मानते है कि शिक्षा हो। शिक्षा तो शादी के बाद भी हो सकती है। शिक्षा जब शादी के बाद हो सकती है तो शादी के बाद नौकरी भी हो सकती है। हमारे यहां उत्तरप्रदेश का कोई भी अधिकारी है उसको जाकर के पूछिये कि तेरी शादी पहले हुई थी कि तू अधिकारी पहले बना था? या तू मंत्री पहले बना था कि तेरी शादी पहले हुई थी? है? मतलब ये शादी के ऊपर ये रोक लगाते हो, तो ये तो हमारे यहां लड़के और नहीं करते है। 26-26, 30-30 साल के लड़के हो गए है और 30-30 साल की लड़कियां हो गई है शादी नहीं करती है क्यो? क्योंकी उनके अन्दर control है, संयम है। संयम बरतने वाला ही तो रुक सकता है। और जो बेसंयम बरतने वाले बैठे है?

अब एक बात बताओ, हमारे जैसे छोटे तबके के आदमी जो है, वो तो ऐसे है कि उनके बच्चे जवान हुए, पैसा उनके पल्ले नहीं है, आज है कल नहीं है। भई लड़का कोई अच्छा सा देखकर के शादी कर दो। है? और जो मंत्रीन, अभिनेत्रीन और ये संतरी के - इनके क्या होवे? इनकी तो भैया - काई की कोई लेके भाग जाए, 6 महीना कू

गायब हो जाए, विदेश में चला जाए तो - Friend के साथ, Friend के साथ गई है। पल्लंग से आई गए - कचरे में ही मिल रहा है - "जुगाड़" - तो वो Friend के साथ तो हुआ है। कोई किसी के साथ थोड़ा ही हुआ है। तो ये हमारे संविधान में नहीं है, ब्राह्मण नीती में नहीं है, हिन्दुत्व नीती में नहीं है। ये नीती है सरकार की नीती। सरकार अपना काम करती है, Public अपना काम करती है। ये संविधान में सारे काम हो तो ये हमारे यहां हिन्दुस्तान की जो प्रजा है ना - ये गरीब के नाते अपने बच्चो की शादी नहीं कर पाएगी। उनकी बच्ची तो फिर भाग ही जाएगी, बेचारियो की। क्यो? कि उनपे पैसा होगा नहीं, लड़की 18 साल में समझते हैं कि बहुत ज्यादा जवान हो गई है। तो इसलिए वो लड़की जो है - अरे! वा की तो शादी है गई, वा की हो गई, सब की हो गई, मेरी रह गई! ये लड़का सोचता है तो अब उनका मतलब इस तरह से प्यार हो जाता है। जो कि आगे के लिए उन्हे परेशानिया उठानी पड़ती है।

अब संविधान तो हमारे, तुम्हारे लिए तो बना दो, इनके लिए भी कछु संविधान है जो नेताजी है? संविधान इनके लिए भी तो होना चाहिए। डकैती मार रहे है, घोटाले कर रहे है पु निया भर के, घपले कर रहे है - इनके लिए कोई संविधान नही है। मतलब इनका Court में हाजिर होने के लिए भी time नही है। इनका वकील time लेके चला आवे। और हम जब हाजिर नही हुए वारंट चला आता है घर के अन्दर। बच्चे समेत उठा के थाने में पहुचा देते हैं। के शाले! आज नी आएगा तो कल तो आएगा?

इनके बालकन ने उलाय के देखयो ? दूसरे मंत्रियो का फोन आ जाएगा, कि तुमने सालो ! इतनी हिम्मत कैसे कर दी? इतनी हिम्मत कैसे कर दी ?

अभी आज ही के पेपर मे, सिपाही ने 50, 50 लीटर के तेल के ड्रम three wheeler मे चोरी करते हुए पकड़े, चोरी करते हुए पकड़े। तो उसने तो है साहस के दिखाने के लिए कहा कि हमारे अफसर जो है, हमारे लिए वाह, वाह करेगे। वा अफसर पे पहले ही फोन आएगो। तो अफसर ने सिपाही को पचास तो गाली दी उसके मुँह पे ही कि तूने इस ड्रम को क्यों पकड़ा ? तेरी क्या औकात है ? तू पुलिस वाला है ? तू क्या है ? ये है वो है। बीट अफसर था थाने का हाके वा को थाने का चौकीदार बना दियो, गेट का। तो बताइए, कि जो इमानदार लड़का है, उसके साथ तो मे तो ये हो रहा है - क्यो ? कि हमारे देश मे आज के Time मे ये हो गया कि - जो यादव मंत्री बन गया तो यादव ही यादव force मे मिलेंगे, पुलिस मे मिलेगे, जितने दफतर है उनमे यादव ही मिलेंगे। और अगर कोई दलित हो गया तो वहाँ पे दलितो की थांदी बजी हुई मिलेगी सब जगह।

इस हिन्दुस्तान मे जब तक ये आरक्षण शब्द खत्म नही होगा, जब तक इस हिन्दुस्तान का उद्धार नही होगा। क्यो ? कि सबको सार्वजनिक रूप से एक बनकर चलो। जैसे वोट बनाने के लिए तुम एक जानते हो ना, वैसे ही तुम ये आरक्षण शब्द को खत्म कर के और एक जान के चलो कि हमारे लिए सब एक है।

जो बच्चा काबिल है उसके लिए नौकरी है। आरक्षण किसी के लिए नहीं है। आज जो 10 साल से 15 साल से नौकरी कर रहा है उसके लिए तो वो ही पद मिला हुआ है और जो 10 साल से नौकरी करने वाला उसका P.A. है उसके लिए उस से ऊँचा पद मिला हुआ है। जो कि ये हीन भावना से देख रहा है नीचे बैठा हुआ कि कल तो ये मेरे लिए इस तरह से मतलब कागज, File उठा के देता था और आज ये मुझसे ऊँचा पद, बैठा हुआ है। ये आरक्षण है। ये आरक्षण है। तो पहले जो 15 साल पहले जो इमानदारी से काम कर रहा उसके दिल में क्या भ्रम आएगा - ऐसी नौकरी से आग लगे, सालो मे घोटाला ही करे जा अब तो। तो घोटाले क्यों होते है? ये आरक्षण करता रहा है। जो मतलब छोटी नौकरी करने वाले जो बैठे है, ये जो घोटाला कर रहे है, या जो मतलब कार्यालो मे हो रहा है घोटाला ये आरक्षण नीति की वजह से घोटाला हो रहा है और ये जो ऊपर जो घोटाला हो रहा है, उन्हे पता है कि - आज है हमारे लिए सीट, कल हम पे सीट ना है, - साले जो कुछ खाना हो, खा ले फटाफट, खाय ले, आगे मौका पूछने की जगह नही मिलेगी, खाय ले फटाफट। तो वो आरक्षण वाले ही घोटाला कर रहे है और कही घोटाला नही है।

अब तुम्हे असली चीज, Congress की - - - - वैसे मैं ना Congress का हूं, ना B.J.P. का, किसी का नही कह सकता हूं। हूं वैसे Congress का

वोट डालने वाला आदमी लेकिन मैं नीती देखता हूं। नीती किसकी बढ़िया है। किसकी अच्छी है। ना तो Congress की नीती अच्छी है आज की तारीख से - क्यों? कि वो दलितो की राजनीती मे एक बार, दो बार सक्रिय हुई है और दोनो बार टक्कर मार के बैठ गयी गई है। क्योंकी दलित जो रथ लेके चलती है, वो ही रथ बेकार हो जाती है और दो बार बैठे है ये और दोनो बार- एक बार तो पंचर है गो, दूसरी बार ब्रस्ट है गो। तो ये इसलिए बेकार कर दी। ये हकीकत है कि दलित हो या अल्प संख्यक या कोई हो, किसी पे अगर राजनीति करोगो तो ये तुम्हे चलने नही देगी। और देश को बरबाद करके छोड़गी। या तो अगर देश को एक बना के चलोगे तो राजनीति करके दिखाओ। एक ही सरकार बन के आएगी और अगर तुम एक दूसरे से जाति वाति करोगे, तो 50 तो सरकार बनेगी और 50 ही पार्टी बनेगी- तो बेटा कुर्सी ढंग से काऊ कू ना मिलेगी। जैसे अटल बिहारी वाजपेयी के दोनो घुटनुओ में दर्द रहता है और एक का Operation हो गया। और एक तोड़ डाला दोबारा, बेटा ऐसे ही टूटते रहेंगे सब के घोंटू (घुटने) क्यों टूटते रहेंगें घोंटू? कि इनके घोंटुओ (घुटनो) की ताकत अब 28 जगह खिंची हुई है तो इनकी तो नसू (नसे) ही बांट मे ना आई। तो इसलिए अटल बिहारी जी पहुंचे बम्बई - क्यो? कि Operation करवाएंगो, अब Operation करवाए कैसे? समता अलग खींच रही है, ममता अलग खींच रही है - मानते हो की नही?

नस बीच मे से टूट गई दर्द शुरु हो गया। तो यहां से इनका Operation चालू हो गया। अब इनकी जवानी तो अब तक टकराई! इनके घोटन का तो हमने दर्द सुनो नाय!

फिर एक संघ का आदमी - कभी हमने सोचा भी नही था कि झूट भी बोलती है पार्टी ये। एक Congress पार्टी किसी agenda को लेके चलती है। इन्होने क्या करा? कि साले का अपना रथ यात्रा agenda निकाल दिया कि हम अयोध्या मंदिर बनाएगे - इनके बाप का मंदिर है? कि राजनिति का खेल देखिये, इनके बाप का मंदिर है? अरे! अयोध्या के लोगो का मंदिर है उसे राजनिती मे घसीटकर के उसे आम हिन्दुस्तान को छोड़ो, विदेश तक को खबर देदी। के हमारे हिन्दुस्तान मे एक मसजिद थी और मंदिर बना दिया उसका। अरे! पहले ही मंदिर था, सबको पता था बाबर ने आक्रमण करके उसे तोड़ा था और उसपे ये करा था। अब ये court को, Supreme Court को और High court को और ये Librahim आयोग को ये पता है, वो कसैट है, किसी ने देखी है - इसपे कितने अत्याचार, और कितने मार गए थे मंदिर पे? जिस दिन, 6 दिसम्बर की ये कहानी है। इसकी कसैट मैं कहीं देख के आया था, ध्यान नही आ रहा कहीं। जब ये आडवानी जी मौजूद थे, सब कोई मौजूद थे वहां, तो उस Period में जब वो तोड़ी थी तो दिल्ली के ही संघ के आदमी गए हुए थे शिवसेना के और उन लोगो ने पूरी ताकत लगाकर के

गुंबद को तोड़ा था। और Public थी पूरी, कोई दिल्ली की ही थोड़ी थी खाली। मतलब हिन्दुस्तान के राज्य से, जगह, जगह से आदमी आया हुआ था और उनकी जो कटाई हुई थी..... और मुलायम ने ये दिखाया था कि मैं मुसलमानो के हित में हूं। और मतलब हर आदमी मुलायम की बुराई कर रहा था। आजकल हम मुलायम सिंह के लिए 'मु--- ल---ला' - उस time ये कहते थे के ये मु---ल---ला है मु---ल्ला। मुलायम नही है। यम तो है ही नही इसमे। मुल्ला रह गया खाली। क्योंकी अगर मुलायम होता ना तो मुलायम रूप से काम लेके जाता। ये तो मुल्लाओ के हिसाब से जैसे भैंस काटते हैं, कटरा काटते हैं उस हिसाब से काम लिवाया। उसमे तो ये भी दिया उस कसैट मे कि इन्होने वर्दी बनवाकर के पेश की थी और नकली पुलिस वाले भेज के कटाई करवाई थी। तो वो कसैट हम देख के व्यर्थ गए थे। हम ये नही कह रहे कि ये कारण से हुआ था। हां इतना जरूर है, कि ये अखाड़ा जो है जमा है BJP की कमी के कारण ही जमा है। क्योंकी B.J.P. ये रथ यात्रा, शोभा यात्रा ना निकालती तो इतना ये हंगामा न होता। और अगर U.P. की govt. अपने शुद्धम रूप से, छोटे रूप से ये चाहती कि हां, यहां मंदिर ही बनाना है - तो वहां मंदिर ही बन जाता। कोई Mohammaden, किसी Mohammaden की इतनी ताकत नही है कि कोई उसे रोकता। क्योंकी Mahammaden को भी तो पता है, यहां बाबरी मस्जिद नही है। राम जन्म भूमि की जगह है और यहां ~~राम जन्म भूमि~~ ही बननी है। अगर court ने भी ये फैसला कर दिया न फिर ये हिन्दुस्तान नही, हिन्दुस्तान मत कहना। फिर, इसे भी पाकिस्तान के

शब्द से सूचित करना। ये हकीकत रखना इस बात का, अगर court भी इस बात का संविधान बना दे ना कि मंदिर नहीं बनेगा, मस्जिद बनेगी, तो ये हिन्दुस्तान शब्द नहीं है। उसी हिसाब से देखिये आप, इतना आदमी मरने के बाद आज वैसे court अगर होती न, किसी गरीब को अब तक फांसी लग जाती। अगर हमने एक कतल कर दिया होता तो हमारे ऊपर इल्जाम जो लगता या किसी Minister को अभी खत्म कर जाओ तो हमारे U.P का या बुलन्दशहर का हो, अलीगढ़ का हो, उसको तो अभी तक फांसी के तखते पर चढ़ा दिया जाता या किरीती करके मार दिया जाता।

इतने बम्ब रखने वाले विदेश के आ रहे हैं। हमारे संविधान में ये नहीं है कि इसको खत्म कर दिया जाए और ये खत्म होते ही ये उग्रवाद खत्म हो जाएगा। ये उग्रवाद को बढ़ावा खुद दे रहे हैं नेता। अगर ये, ये काम न करे ना।, तो ये विदेश मे जाकर के पैर नहीं रख सकते। इनके अपने जान के लाले ज्यादा हैं कि हम जाएंगे, हमारे बच्चे वहां पढ़ रहे हैं। तो वो ही कहीं खात्मे में ना आ जाएं और उन बच्चों की अपने के खातिर। और हमारे यहां का बच्चा बाप नहीं कह सकता अपने बाप को अब, क्यो? कि वो तो सरहद पे ही खत्म हो चुका। बाप तो सौदा लेने जा रहा है सरहद पे वो खत्म हो चुका उसका। तो यहां उन्ही आपका, कौन सा महल उड़ाने को आए? अमेरिका के दूतावास को? किसको? 3 आदमी उड़ाने को आए - पकड़े गए। अरे उनसे result ले लीजिए।

End कर दो इसका, तो इसका end कर दो। वो --- 166, कितने आदमी ले गया था जहाज मे? 3 आदमी के छुड़ाने के चक्कर मे इतने हिन्दुस्तान की कर गई बिल्कुल। क्यों न छुड़ाए? अरे इन सबको साथ रखते जितने संग थे और लाइन मे लगाकर देते और या तो बेटा इन्हे छोड़ दे, नही तो हम सब तेरे पार कर रहे है। तू कमोर पार कर & और हम तेरे पार कर रहे है। ले! सुन ले चुपचाप अब!! उनकी तो बाप की क्या औकात? जब जिन्दा वो मांग रहे है तो जिन्दा वो अपने आप ही देते? और मरे मांग रहे है तो मरे ही अपने आप देते। मगर सख्ती नही इस हिन्दुस्तान मे अब। सख्ती नाम की चीज़ ये खो चुके है। अब ये कहते है कि हम अपना एक ऐसा वो बनाए कि हम पिटते रहे, मरते रहे, और हिन्दुस्तान मे Public को मरवाते रहे और हम एक हिन्दुस्तान मे 100 बार ये दिखाये कि हम बहुत बढ़िया प्रधानमंत्री पैदा हुए हैं। हम बहुत कुछ सोच रहे है, कुछ. कर के दिखाएंगें! बस ये ही शब्द है उनके यहां कि हम सोचेंगे, दिखाएंगे, करेगें, करेगें तो होगा, कुछ नही होगा देश बरबाद होगा। - ये करके दिखाएगें। अभी अब तक तो देश - अगर कोई इमानदार इस देश का प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बनेगा तो इस देश का कभी ये नहो होगा। जो आज ये परेशानिया काटनी पड़ रही है।

ऐसा है कि ये संघ परिवार का मैंने ये देखा है कि इनका मतलब राजनीती मे जो कार्यकर्ता है, इनके संघ मे जो काम करते है वो शाखा लगाते है तो मतलब इनकी स्वास्थ्य के प्रति ज्यादा भावना रहती है। संघ, शिव सेना में फर्क इतना है कि अगर वो शिवसेना वाले है तो मतलब अगर कोई बात हो गए तो तुम पे लाठी चार्ज करने की सोचेंगे। और ये संघ इतना मतलब रखता है कि मतलब स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए। उसके लिए जैसे देखा होगा गांव मे जैसे P. T. करते है, स्वास्थ्य के लिए ही मतलब भाग दौड़ करते रहते हैं। उसमें कोई ये नही है कि वो कोई राजनीति से प्रेरित रहते हो। उनका काम केवल ये है कि भई स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए। उनकी शाखा में जाने में लाभ भी है। क्योंकी अगर किसी को किसी तरह की परेशानी अगर शारीर की है तो शारीर की परेशानी का वहां जाकर के निवारण हो सकता है। और अगर शाखा मे जाना चाहते हो तो सारा ही निवारण हो जाता है। लठ्ठ चलाते है और सही फिट कर देते है Fitness को। कही जगह हमने देखा है कि शाखा वाले अगर कोई किसी को गलत बात बोल जाता है रास्ते मे, या किसी से अनबन हो, तो वो शाखा मे जाकर कह दे कि जी ये मेरे से ऐसे, ऐसे बदनामी कर रहा था शाखा की। जैसे आजकल ये कह देते है न कि वो हिन्दु मुसलमान मे लड़ाई हो रही है। तो वहां पहुंच गए लठ्ठ लेके। तो कोई बात नही - बे फिजूल का मतलब - की धर्मा ग्रस्त बढ़ावा देना या किसी को कुछ करना ये संघ मे नही करता - ये संघ में नही है।

सभ्य परिवार स्वास्थ्य परिवार है - स्वास्थ्य चाहता है। और शिवसेना लठ्ठधार परिवार है और वो चाहते है कि मतलब वो जो है- ------ क्योंकी क्या नाम है तुम्हारा --- जो बम्बई में बैठे हुए है - बाल ठाकरे साहब - ये इनकी पार्टी है। तो इनकी पार्टी मे तुमने देखा होगा कि वहां इनपे इसी बात के केस चल रहे है। जरा इशारा दिया - वो तो ऐसे है कि जैसे चंबल की घाटी के सरदार कोई होता है। - कि आज ठाकुर साहब के घर मे डकैती डालनी है। तो इस ठाकुर साहब के घर मे डकैती डल जाती है। ऐसे ही ठाकुर साहब का हिसाब है। तो इसमे तो हम कुछ कह ही नही सकते।

तुमने खुद देखा होगा, T.V. मे देखा होगा - "अगर हमें गिरफ्तार किया तो अच्छा नही होगा", ये कोई चीज है जभी तो इस बात को कह सकते है।

⇒ फिर आपने कभी सोचा हो कि स्वास्थ्य लाभ कमाया जाए ?

स्वास्थ्य लाभ कमाने के लिए तो देखो - हम अपने घर पे ही करते है। हम इन शाखाओ मे जाने का मन क्यों नही करते कि - जरा सी बात पे मतलब कोई बात चलने लगे वहां ? तो स्वास्थ्य की जगह अनस्वास्थ्य ही बन जाए ! वहां जाके क्योंकी वहां शाखा और इसकी भी ------ एक ऐसा पार्क है जहां पे जाते है कि वहां दोनो की शाखाए अलग अलग लगाती है। तो दोनो की शाखाओ मे कोई दिन फूट पड़ जाए और आपस मे ही ~~फूट पड़ जाए~~ व लठ्ठ बजने लगे तो

वहां जा रहे स्वास्थ्य बनाने और आ रहे हैं इधर से घायल है के। तो ये भी स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इसलिए हम जो पड़ते नही इन चक्करों मे और फिर कोई भी चक्कर हो, कोई भी नशा हो, कोई भी बात हो, कोई भी राजनीति हो - जिस गहराई मे जाओगे आप सदैव दुखी ही रहोगे।

सदा पढाई मे, या अच्छी बातो मे जाओगे तो सुखी रहोगे। अगर ये राजनीति खेल है। ये अभी एक आया ------ कि अबके तो आपको विधायक की टिकट दिलायेगे। क्यो घबड़ा रहे हो? कि हमारा जैसा कोई हल्का फुल्का आदमी और विधायक की टिकट मिल जाएगी? हम सोचेगें हा! यार हम से बड़ा नेता है - ये तो कह रहा है कि विधायक की टिकट मिलेगी। तो हम तो उसका पीछा करना शुरु कर देगें, कि चलो तो ये विधायक की टिकट दिलवा रहा है। देखा बना दिया ना बेवकूफ साले को। तो हम जैसा इसको खिलएगा भी पिलाएगा भी, कही जाएगें तो किराये पे भी ले जाएंगो क्योकी हमारे लिए वो टिकट दिलवाएगा। और वो पता नही है कि जितना आदमी हम है, उतना ही ये है। तेरी और इसकी एक ही चलती है भाई तेरे लिए क्या टिकट दिलवा देगा? जब विधायक की टिकट 30, 50 लाख और 35, 35 लाख की हमारे सामने खरीदी गई थी इस ब्लाक की - करावल नगर ब्लाक की। तो हम कैसे कह देगे कि यहाँ करावलनगर Block मे किसी गरीब को टिकट मिल जाएगी? मानते हो कि नही? अगर Congress पार्टी की टिकट 30, 30 लाख, 35, 35 लाख की खरीदी गई थी यहां। जो ईमानदार कार्यकर्ता कर्मठ है उसको

देके दिखाते।

मगर ये शीला दीक्षित ने यहाँ ऐसा काम किया था कि एक कि एक टिकट जिले सिंह को दिलवाई थी जो Professor जिले सिंह है। इस इलाके मे हमारे बिहार से लेकर मे जहाँ वोट है उनके गढ़ है - Congress के। उनमें कोई जानता भी नहीं कि जिले सिंह कौन है? जिस time उन्होंने टिकट ली थी उन्हे कोई जानता नही था कि जिले सिंह कहाँ रहते है? कौन है? एक, दो होंगे उनके पदाधिकारी। हम इतने दिन अध्यक्ष भी बन के रहे Unit के congress के और इसके बाद हम हर पोलिंग स्टेशनो में बैठते है - मतलब हम हर जगह जाकर के हर ब्लाक के अन्दर जहाँ vote होती है Polling करते है - मतलब हमे तो यें ही पता नही चलता कि Congress मे है कोई जिले सिंह? जब बाद मे टिकट आई तो लोगो ने कहा कि जिले सिंह को मिली है। हमने कहा कि मिलनी तो किसी और को थी, उसको कैसे ना मिली? कहने लगे कि पैसे के आगे सब टक्कर खा गए। हमने कही कि पार्टी ~~कहीं~~ मे इतने झगड़े है। ये पार्टी कहीं निकाल के तो नही जानी। जब हम कार्यकर्ता होकर इस बात को कह रहे है तो वो पार्टी नही नहीं निकाल पाई, और वो आदमी जल्दबाजी मे निर्दलीय भी टिकट ले आया। उसने कितनी वोट काटी उसकी? अगर वो ही टिकट इस आदमी को दे दी जाती। ये राज-नीति शीला दीक्षित न खेलती तो काहे को ये कार-नामे होते। ये विधायक बिष्ट (मोहन सिंह बिष्ट) न होता तो फिर तो congress फिर तो Congress के ही नगर पार्षद होते दोनो। Congress का ही होता विधायक। मगर राजनिति बड़ी गन्दी है। हिन्दुस्तान की राजनीती गंदी न होती तो ये इतनी Factory, इनो

ये बेरोजगार हो गए हैं। ये दिल्ली सरकार और केन्द्र सरकार, मैं तो दोनो को ही दोषी मान के चलता हूं। इस हिन्दुस्तान में, इस राजधानी को बरबाद करने का मैन मकसद केन्द्र का दिल्ली सरकार का है अपनी सफाई इसमे अपने आप दे - कि हाँ केन्द्र की गलती है। वो तो कह देता है कि केन्द्र की गलती है। जनता जानती है कि कौन की गलती है? जनता जानती है सब क्योंकी वो भूकी मर रही है। वो - गुजरात मे तो भूकम्प और दिल्ली में हककम्प बराबर बैठा है। वहां के लिए तो इतना साधन जुटाया गया मगर नही मिला उन लोगो को आज तक।

और इतने भूके मर रहे है, इतने फांसी देके मर रहे है क्योकी यहां बेरोजगारी हो गई इतनी। जो देहात छोड गए, जमीन जायदाद छोड़के आए यो दोबारा - उन को रोजी रोटी से परेशान कर दिया सरकार ने। तो काहे की मतलब सरकार है। यहां तो बेफजूल का ड्रामा बन रहा है। इसलिए यहां की सरकार से Public हमारी बडी परेशान है और परेशान ही हमे दीख रहा है - रहेगी।

—x—x——x——x